National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(63): 35-38
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. सैयद मुईन
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग,
सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान,
क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय,
के. नारायणपुरा, बैंगलोर - 560077

Correspondence:
डॉ. सैयद मुईन
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग,
सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान,
क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय,
के. नारायणपुरा, बैंगलोर - 560077

कर्नाटक के महत्वपूर्ण लोक वाद्ययंत्र

डॉ. सैयद मुईन

भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों का इतिहास वेदों जितना ही प्राचीन है। शास्त्रीय वाद्ययंत्र आदिवासी मूल से आते हैं, और इन्हें बजाने की कलात्मक क्षमता के साथ, चाहे आदिवासी या लोककथाओं में हों। उनके दैवीय परिश्रम का श्रेय उपकरणों के प्रति उनकी मासूम भक्ति को जाता है। मंदिरों और मेले के त्योहारों में इन उपकरणों की जरूरत होती है। अन्य वाद्ययंत्रों की तुलना में ताल वाद्य यंत्र अधिक आदिम होते हैं। एक विद्वान साधन के अर्थ को इस प्रकार संदर्भित करता है:'the earliest musical instrument was the human voice'. अमेरिकी विश्वकोश उपकरणों के विकास की व्याख्या देता है. Musical instruments were not invented, they developed slowly and comparatively were late much later than singing' मुद्दा यह है कि ये संदर्भ केवल एक दिन की रचना नहीं हैं बल्कि समय के साथ विकसित हुए हैं और एक आदर्श आकार ले चुके हैं। उत्तेजना, पूजा, आनंद, उत्साह और मनोरंजन के लिए यंत्र अनिवार्य हैं। २-५ मिनट की अवधि में अपना आकर्षण खोते जा रहे नए वाद्य यंत्रों के प्रयोग के अभाव में आदिवासी/लोक संगीत नीरस हो गया है। यह खेद की बात है।

उल्लेखनीय है कि जनता ने उनके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले उपकरणों की उत्पत्ति के लिए एक दिव्य छवि बनाई और प्रत्येक साधन के लिए एक कहानी बनाई। उदाहरण के लिए, परशुराम ने अपनी मां के दु:ख को कम करने के लिए कार्तवीर्यजुन के शरीर के विभिन्न हिस्सों से एक पट्टी बांधी। कार्तवर्जुन के उदर गुहा, आंतों के तार, हाथ की सिलाई, उंगली की छड़ी, अभी भी भेड़ की आंतों के तार के साथ देखी जा सकती है।

एक अन्य कथा के अनुसार, अर्जुन ने अपनी अन्य पत्नियों सुभद्रे, उलुपी और चित्रांगदे के घर जाने से ईर्ष्या करते हुए द्रौपदी अर्जुन को जुए में पीटा। एक शर्त के रूप में, जोगी ने भेष बदलकर भगवान शिव से विभिन्न हड्डियाँ लीं, जिन्होंने इंद्र के अनुरोध पर राक्षस हिरण्याक्षी को मार डाला और उसे अपनी जांघों की हड्डियों से बनाया। उसने अपने दो स्तन से वीणा बनाई, उसने अपनी नाक से पीतल की छड़ें बनाईं, उसने अपने सोलह दांतों के साथ सारंग बनाए, अपनी उंगलियों से कंगन, और अपनी नसों से तार बनाए।

वीरभद्र ने चामलसुर नामक राक्षस का वध किया, और एक राक्षस को मार डाला और एक राक्षस को मार डाला और दक्ष ब्राह्मण को मार डाला। एक किंवदंती यह भी है कि गणपति ने भगवान शिव को हराने के लिए डॉलसुर के शरीर से डॉल्फ़िन का निर्माण किया, जिसने डोलोसुर का पेट चीर दिया। एक अन्य कथा के अनुसार, डॉलरासुरन नामक राक्षस ने शिव का अपमान किया और शिव से उनके पेट में डुबकी लगाने की भीख मांगी, जब शिवांग और गंगा गौरी विष्णु को पुकारते हैं, विष्णु के प्रयास से शिव डॉलरासुर के पेट से बाहर आए भगवान शिव के तीसरे नेत्र से भयभीत होकर विष्णु ने डोलोसुर के पेट में एक विशेष यंत्र बनाया और उसे बजाने लगे । शिव ध्वनि से मुग्ध हो गए और डोलोसुर भगवान शिव के प्रिय यंत्र बन गए।

तारकासुर, मकरासुर और युद्धमारि राक्षसों की हिंसा जब अधीर हो जाता है जब देवत भगवान कृष्ण के पास मदद के लिए आते हैं, कृष्ण जानते हैं कि इन तीनों राक्षसों के प्रभुत्व का कारण उनकी पत्नियों की पतिव्रत संपत्ति है। अपशकुन और शगुन के बहाने राक्षस पत्नियों का हाथ पकड़कर उनकी सत्यनिष्ठा भंग कर देते हैं राक्षसों को नष्ट करने से लौटने पर, एक व्यक्ति कृष्ण का सामना करता है और उससे एक बुदबुदके का यंत्र प्राप्त करता है कृष्ण के आशीर्वाद से, वह अपने वंशजों के गोत्र बनकर, अपने शगुन का पेशा शुरू करता है।

ढोल और चौड़ीके वाद्ययंत्रों से जुड़े कल्पित में, एक बुरे व्यक्ति के शरीर के विभिन्न हिस्सों को जाना जाता है। व्यक्ति बुरा हो सकता है, लेकिन वह स्वयं यंत्र बना सकता है, जिसका अर्थ है कि सबसे बुरे को लाभ हो सकता है। लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण आम नहीं हैं इन उपकरणों का उपयोग पौराणिक कथाओं द्वारा किया गया था, जिन्होंने बनाया और ये यंत्र ईश्वर से संबंधित होने का दावा करके यंत्र के मूल्य को बढ़ाते हैं वे इस तथ्य को कायम रखते हैं कि साधन इससे कमतर नहीं है।

ऐसी भावना है कि लोक वाद्ययंत्र धर्मनिरपेक्ष या धार्मिक हैं, धार्मिक उपकरणों के उपयोग के लिए विशेष प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। इसका प्रयोग विशेष अवसरों पर ही करना चाहिए, जब यंत्र बांधे जाते हैं, गोदी से गोद की पूजा की जाती है, और कुछ मामलों में पशु को दिया जाता है, हर कोई यंत्रों को नहीं हरा सकता इसका उपयोग रूढ़िवादी व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए।

उपकरणों का उपयोग

- भिक्षा लेते समय
- भगवान की सेवा के दौरान
- नृत्य प्रदर्शन के दौरान
- गायन के दौरान में

आदिवासी/लोक वाद्ययंत्रों को तार, धातु, वायु, चमड़े के वाद्ययंत्रों में विभाजित किया जा सकता है, लेकिन संगीत, संगीत, धुन और धुन में भी वर्गीकृत किया जा सकता है। लगभग 100 उपकरणों में से 20 श्रुति वाद्ययंत्र, ताल वाद्य 50, संगीत वाद्ययंत्र 10 ।

तार वाले वाद्य यंत्र:

*** एकतारी:**

यह वाद्य यंत्र कच्चे सोरा की छाल को सुखाकर, उसका गूदा निकालकर, उसमें तीन फीट लंबी बांस की छड़ें डालकर, और उन्हें एक सिरे से दूसरे सिरे तक बांधकर बनाया जाता है। जब उंगली से तार को झंकृत किया जाता है, तो एक आवाज़ निकलती है। यह वाद्य यंत्र धार्मिक सहनशीलता का एक अच्छा उदाहरण है। इसे सूफी, दास, डोंबिडा, तेलुगु जंगम आदि गायक इस्तेमाल करते हैं। इसके इस्तेमाल के निशान 5वीं सदी की अजंता गुफा की पेंटिंग में भी देखे जा सकते हैं।

***किन्नरी:**

तीन सूखे, गूदे वाले गन्ने के छिलके तीन फुट लंबे बांस के डंडे से जुड़े होते हैं। उनके बीच चार तार जुड़े होते हैं, डंडे के एक सिरे पर सुलंकी की लकड़ी से बना तोता जुड़ा होता है, और दूसरे सिरे पर मोर के पंख जुड़े होते हैं। इस तरह, किन्नरी बनाने और इस्तेमाल करने वालों को किन्नरीजोगी कहा जाता है।

***वीना**

कटहल की लकड़ी से बना यह वाद्य यंत्र डफली और नीलगाय बजाने वालों द्वारा इस्तेमाल किया जाता है।

***चौड़ीके**

नारियल के पेड़ के तने का गूदा, जो लगभग एक फुट लंबा होता है, उससे एक ड्रम बनाया जाता है, जिसे एक तरफ बत्तख या बकरी की खाल से ढक दिया जाता है, खाल के बीच में एक छेद किया जाता है, भेड़ की आंतों की एक रस्सी को कसकर बांधा जाता है और आवाज़ निकालने के लिए रस्सी को एक छड़ी की मदद से खींचा जाता है। देवी एलम्मा से जुड़े गाने गाते समय चौडिके और चौडिके का इस्तेमाल एक संगीत के उपकरण के तौर पर किया जाता है।

***टुनथुनी:**

यह एक तार वाला वाद्य यंत्र है। इसे उत्तर कर्नाटक की कई कलाओं में बजाया जाता है। ढोल के नीचे बत्तख की खाल बांधकर तीन-चौथाई फुट लंबा नारियल या अंजीर का पेड़ बनाया जाता है। खाल के बीच में एक छेद किया जाता है और भेड़ की आंतों को तार से बांधा जाता है। टुनथुनी से निकलने वाली टुन टुन टुन की आवाज के कारण इसे टुनथुनी कहा जाता है। इसका इस्तेमाल पंडित और चौधिकी अपने गायन में करते हैं।

हवा से बजाए जाने वाले वाद्य यंत्र

***बांसुरी, पिल्लंगोवी, गाने:**

गाने बांस से बनी एक बड़ी बांसुरी होती है। यह वाद्य यंत्र सिर्फ़ कडुगोला जुंजप्पा के भक्तों के बीच ही मिलता है। यह कडुगोला का पवित्र वाद्य यंत्र है। कडुगोला इसे मवेशियों, बछड़ों और भेड़ों को चराते समय मधुरता से बजाते हैं। इसे धुन बनाकर जुंजप्पा सबसे पहले देवताओं के पुराण गाते हैं। इसी तरह, इसे ऊदी कानी कहते हैं।

गणे वाद्य

गान तीन फीट लंबा और दो इंच मोटा होता है। अगर बांसुरी दो चीज़ों के बीच जितनी लंबी है, तो गान में तीन चीज़ें होती हैं। इन तीन चीज़ों में से, पहले वाले को रखा जाता है और बाकी दो चीज़ों को गान के साथ हवा चलाने के लिए एक ट्रिक के तौर पर हटा दिया जाता है। गान में पाँच छेद होते हैं, माउथपीस बंद चीज़ से थोड़ा दूर होता है, और बाकी चार छेद गान के दूसरे सिरे के पास होते हैं।

ओलागा:

दो फुट लंबा एक संगीत वाद्ययंत्र, जिसके एक सिरे पर नुकीला और दूसरे सिरे पर चौड़ा होता है। इसमें एक सिरे से दूसरे सिरे तक चौदह छेद होते हैं। एक को बंद करके और दूसरे को खोलकर, अलग-अलग आवाज़ें निकाली जा सकती हैं।

मुख वीणा:

यह एक छोटा सा वाद्य यंत्र है, जो एक फुट लंबा होता है, जिसके एक तरफ दो और दूसरी तरफ आठ छेद होते हैं, जंगली लकड़ी का बना निगाली (माउथपीस) होता है, और बजाने के लिए रीड जैसी तांबे की रीड का इस्तेमाल किया जाता है। मुख वीणा अंजिनप्पा, जो मुख वीणा बजाने के लिए मशहूर हैं, उन्हें यहां याद किया जा सकता है।

पुंगी:

एक वाद्य यंत्र जिसे जिया की एक डंडी को एक खोखले खोल में डालकर मुंह से बजाकर बनाया जाता है। सपेरे इस वाद्य यंत्र का इस्तेमाल सांपों को मोहित करने के लिए करते हैं। पहले, इसे एक संगीत वाद्य यंत्र के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता था।

सींग, तुरही, रानाकहेल, भोंकी:

ये चारों वाद्य यंत्र एक जैसे हैं लेकिन सिर्फ़ शेप और साइज़ में अलग हैं। तुरही इंग्लिश S-शेप के सींग जैसा होता है, सींग थोड़ा मुड़ा हुआ होता है, तुरही सींग का ही एक बेहतर रूप है, और अगर तुरही सीधा हो, तो उसे रानाका हेल कहते हैं। तिरुपति थिम्मप्पा के भक्तों द्वारा बजाई जाने वाली छोटी तुरही को भोंकी कहते हैं।

शंख:

वे समुद्र में पाए जाने वाले शंख में छेद करके उसे बजाते हैं।

सिंगनाड और हिरण का सींग:

आदिचुंचनगिरी के भैरव के भक्त योगी, सिंगनाड नाम का एक चांदी का नली बजाते हैं, जो असल में हिरण के सींग से बना होता है।

चमड़े के वाद्य यंत्र

***तमाटे या पाटा:**

जैसा कि कहावत है, "कोई गांव चूल्हे के बिना नहीं होता, कोई गांव बिना तमाटे के नहीं होता" यह एक लोकप्रिय कथन है। यह संगीत के उपकरण एक खास वाद्य यंत्र है जो आम लोगों की भावनाओं को समझता है, दर्द और दुख दोनों में, बिना अच्छे और बुरे के असर के। विवेक चिंतामणि में तमाटे का ज़िक्र पांच संगीत के उपकरण में से एक के तौर पर किया गया है।

नागरी:

नागारा या नक्कारा नाम का एक पुराना भारतीय वाद्य यंत्र आज भी लोकप्रिय है। यह भैंस की खाल से बनता है और दो तरह का होता है, अकेला नागरी और दोहरा नागरी। अकेला नागरी का इस्तेमाल मंदिरों और मठों में होता है, जबकि दोहरा नागरी का इस्तेमाल देवताओं के जुलूस और रथ उत्सवों में होता है। इसका इस्तेमाल सिखाने के वाद्य यंत्र और जीत के निशान के तौर पर किया जाता है।

ढोल, डोलू:

एक ढोल पेड़ के खोखले तने, दीये के पेड़ के तने या होन के पेड़ के तने को तराशकर बनाया जाता है, और एक तरफ बकरी की खाल और दूसरी तरफ चमड़े के टुकड़े से ढका जाता है। डोलू, डोली से बड़ा होता है, लगभग चार फीट लंबा और दो से तीन फीट चौड़ा, और इसके दोनों तरफ भैंस की खाल लगी होती है। जब इसे किसी डंडे या छड़ी से मारा जाता है, तो इसकी आवाज़ बहुत दूर से सुनी जा सकती है। दोनों ही युद्ध के वाद्य यंत्र हैं। इनका इस्तेमाल त्योहारों में किया जाता है। बीरेदेवा के भक्त चरवाहे डोलू को अपनी कमर पर बांधते हैं और जोश के साथ नाचते हैं।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार डोलू की शुरुआत दिव्य जोड़े शिव और पार्वती से हुई है। समय बिताने के लिए, शिव और पार्वती ने एक खेल खेला और एक शर्त लगाई। जो भी शर्त लगाएगा उसे कैलाश छोड़कर धरती (पृथ्वी) पर गुमनाम रूप से रहना होगा। शिव अपनी शर्त हार गए और पत्थर का रूप लेकर एक गुफा में चले गए। शिव के पक्के भक्त मायामूर्ति ने गुफा की रखवाली की। समय के साथ, पार्वती दुनिया को प्रबंधन करते-करते बोरियत हो गईं और उन्होंने शिव को ढूंढने के लिए वायु को भेजने का फैसला किया, लेकिन यह बेकार गया। नारद ने गुफा खोजी, मायामूर्ति को मार डाला और शिव को कैलाश लौटने पर मजबूर कर दिया। शिव, अपने भरोसेमंद और प्यारे रखवाले की लाश को छोड़ने को तैयार नहीं थे, इसलिए उन्होंने लाश से एक डोलू बनाया और उसे कैलाश ले गए। अपनी शुरुआत की वजह से, डोलू शैव लोगों के बीच एक लोकप्रिय वाद्ययंत्र है।

हरे:

धातु या लकड़ी का सिलेंडर जैसा बर्तन जिसके दोनों तरफ बकरी की खाल लगी होती है और जिसे डंडे से रगड़ा जाता है, जिससे यह रगड़ने वाले संगीत वाद्ययंत्र के बजाय परकशन संगीत वाद्ययंत्र बन जाता है। इसे हुरुमावरद्या भी कहा जाता है। इस संगीत वाद्ययंत्र का इस्तेमाल वे लोग करते हैं जो स्लैंग करते हैं।

ताकुरी, समेला:

ताकुरी एक छोटे ड्रम जैसा संगीत वाद्ययंत्र है। इसे मिट्टी के बर्तनों पर लेदर लगाकर बनाया जाता है और घुमावदार डंडियों से बजाया जाता है। ताकुरी से बड़ा संगीत वाद्ययंत्र समेला या चमाला है। इसके हिस्से कांसे, लकड़ी या मिट्टी के बने होते हैं और लेदर से ढके होते हैं। एक हिस्सा बड़ा होता है और दूसरा छोटा। यह मुख्य रूप से वीर रस के लिए इस्तेमाल होने वाला संगीत वाद्ययंत्र है।

कराडे:

यह डेढ़ फुट लंबा वाद्य यंत्र होना या बुगुरी की लकड़ी से बने खोखले लकड़ी के शाफ्ट के दोनों किनारों को बकरी की खाल से ढककर बनाया जाता है।

डमरूगा और बुदुबुदिके:

हालांकि ये एक जैसे दिखते हैं, लेकिन डमरूगा आकार में बड़ा होता है, जिसे पीतल के दो छल्लों को बकरी की खाल से ढककर बनाया जाता है, जबकि बुदुबुदिके बिल्व के पत्तों के दो टुकड़ों को मेंढक की खाल से ढककर बनाया जाता है। गोरा लोग डमरूगा का इस्तेमाल करते हैं, जबकि बुदुबुदिके लोग बुदुबुदिके का इस्तेमाल करते हैं।

धक्के:

धक्के नीलगर, भूतराधाना परंपरा और नागमंडल पूजा परंपराओं में एक ज़रूरी संगीत वाद्ययंत्र है। धक्के बजाते हुए देवताओं को खुश करने के लिए गाने गाए जाते हैं। धक्के नीलगरों के कविता गाने के लिए डफली के साथ एक साथ बजाया जाने वाला संगीत वाद्ययंत्र है। धक्के एक ढक्कन वाला संगीत वाद्ययंत्र है, आवारिक पौधे की जड़ को पानी में भिगोकर तांबे के तार में लपेटा जाता है, तार को चमड़े से ढक दिया जाता है, चमड़े को एक साथ सिल दिया जाता है, ढक्कन तैयार किया जाता है, दोनों ढक्कनों के बीच एक छेद किया जाता है और छेदों से धागे को चमड़े के चारों ओर बांध दिया जाता है।

गममेट:

यह एक तरफ़ से बंद चमड़े का वाद्य यंत्र है, यह एक अनोखा वाद्य यंत्र है जो इलाके की खासियत दिखाता है। करापाल लोग इस वाद्य यंत्र को आगे-पीछे घुमाकर बजाते हैं। इसे तुमाकी, डुमाकी भी कहते हैं। जीशम्पा ने चार तरह के गममेट वाद्य यंत्रों की पहचान की है। यह मिट्टी और चमड़े का एक आसान ढांचा होता है। गोल और लंबा गममेट आज भी तटीय इलाकों में देखा जा सकता है।

कुणिमिनी, चक्रवाद्य और दम्मादि:

छोटे और सहायक वाद्य हैं।

चंदे:

पुरानी हिंदू मूर्तियों, पेंटिंग और पौराणिक कथाओं में, चंदे को अक्सर युद्ध (राणा चंदे) का ऐलान करने के लिए इस्तेमाल होने वाले एक वाद्य यंत्र के तौर पर दिखाया जाता है। यह वाद्य यंत्र मुश्किल रिदम पैदा करता है जिसे 3 km से ज़्यादा दूर से सुना जा सकता है। हालांकि, चंदे को हाल ही में यक्षगान, जो एक संगीत प्रदर्शन है, में शामिल किया गया है। माना जाता है कि इसका इस्तेमाल लगभग 150 साल पहले से होता आ रहा था।

ताल वाद्य यंत्र

*** ताल:**

दो पीतल की ताल को एक साथ बजाकर आवाज़ निकाली जाती है। ताल में छेद किए जाते हैं, उनमें से एक तार डाला जाता है, और दोनों ताल को एक साथ बांध दिया जाता है, ताकि दोनों ताल को हाथ में पकड़ना मुमकिन हो।

***चिताकी:**

लकड़ी के डफली को चिताकी कहते हैं। जब लकड़ी के दो टुकड़ों को, एक को अंगूठे के बीच और दूसरे को तर्जनी उंगली के बीच पकड़कर, एक साथ मारा जाता है, तो इन टुकड़ों से जुड़े धातु के टुकड़ों से एक आवाज़ निकलती है, जो आमतौर पर छह इंच लंबे होते हैं।

***घंटी:**

हेलाव लोग घंटी बजाते हैं और अलग-अलग कहानियाँ सुनाते हैं। नॉर्थ कर्नाटक के गोरव लोगों के बाएं कंधे पर एक डोरी के एक सिरे पर घंटी बंधी होती है। दूसरे सिरे पर नाव का कटोरा बांधकर लटकाया जाता है। इसे सिर्फ़ गाते समय ही बजाया जाता है, जैसे हेलाव्स की घंटी।

***झल्लारी:**

ये पीतल की बड़ी ताल होती हैं।

*** जगते:**

दास परंपरा में जगते का इस्तेमाल होता है। जगते दो तरह के होते हैं: सदा जगते और जगन्नाथ जगते।

लोकगीतों ने वाद्ययंत्रों को अपनी संस्कृति का एक ज़रूरी हिस्सा बना दिया है। यहाँ कुछ लोक परंपराओं में वाद्ययंत्रों के बारे में दी गई कुछ ज़रूरी बातें बताई गई हैं।

पुराने समय में वाद्य यंत्र बजाने वालों का सम्मान किया जाता था लेकिन आज की आधुनिक दुनिया में कलाकार भिखारियों की तरह दिखते हैं। लोक वाद्ययंत्रों या कलाओं को संरक्षित और विकसित करना हमारा दायित्व है अपनी संस्कृति को अपनी आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाना हमारा कर्तव्य है।

संदर्भ:

1.कर्नाटक के लोक वाद्ययंत्र: जी.एस. परमशिवैया, IBH पब्लिकेशन्स, बैंगलोर, 1980

2.कर्नाटक संगीत के वाद्ययंत्र: एम.चालुवरया स्वामी, IBH पब्लिकेशन्स, बैंगलोर, 1978

3.कर्नाटक के लोक वाद्ययंत्र: डॉ.जी.ए. सुब्बालक्ष्म्मा, ज्ञानदोया पब्लिकेशन्स, बैंगलोर, 2000

4.लोकगीत: सर्वे-एनालिसिस: डॉ. टी.एन.एस.ए.करणनारायण, प्रियदर्शिनी पब्लिकेशन्स, 1999

5.मार्शल इंस्ट्रूमेंट्स: के. श्रीकंथैया, IBH पब्लिकेशन्स, बैंगलोर, 1980

6.कर्नाटक की लोक कलाएँ: जी.आर.चन्नाबसप्पा, कन्नड़ साहित्य परिषहट्टू, बैंगलोर, 1977

7.कर्नाटक की जनजातियाँ, पार्ट 1 और 2: एच.जे. लक्कप्पागौड़ा द्वारा एडिटेड, कर्नाटक लोकगीत और यक्षगान अकादमी, बैंगलोर, 1988.

8.येट्टप्पा, पी.बी. शिवन्ना, CVG पब्लिकेशन, बैंगलोर, 2002

9.ट्राइबल स्टडीज़; पार्ट 1 और 2: एच.सी. बोरालिंगैया और ए.एस. प्रभाकर, कन्नड़ यूनिवर्सिटी, हम्पी, 2008

10.कडुगोल्ला की परंपराएं और मान्यताएं, टी.एन.एस. शंकरनारायण, मैसूर यूनिवर्सिटी, मैसूर, 1982